

बच्चों को एड्स से बचाने के तरीके का परीक्षण

यदि मां एड्स वायरस से संक्रमित है तो 15-45 प्रतिशत तक संभावना होती है कि उसका बच्चा वायरस के साथ पैदा होगा। जैसे तो गर्भावस्था के दौरान एड्स का उपचार दिया जाए तो मां से बच्चे को वायरस का स्थानांतरण रोका जा सकता है मगर फिर भी कई बच्चे एड्स वायरस विरासत में लेकर पैदा होते हैं। इन बच्चों को एंटी-वायरस औषधि दी जाती है ताकि वायरस को काबू में रखा जा सके। पिछले साल तक यही माना जाता था कि हम वायरस को काबू में ही रख सकते हैं, उसका सफाया नहीं कर सकते।

फिर पिछले वर्ष *दी न्यू इंग्लैण्ड जर्नल ऑफ मेडिसिन* में प्रकाशित एक खबर ने इस मामले में आशा की एक किरण दिखाई थी और अब उसको आगे बढ़ाने के प्रयास शुरू हो रहे हैं।

हुआ यह था कि एक शिशु एड्स वायरस से संक्रमित पैदा हुआ था। डॉक्टर्स ने जन्म के 30 घंटे बाद उसको ज़ोरदार एड्स वायरस रोधी दवाइयों का एक सम्मिश्रण देना शुरू कर दिया। फिर जब बच्चा 18 माह का हुआ तो औषधि का यह सम्मिश्रण देना बंद कर दिया गया। हैरत की बात थी कि इस बच्चे के रक्त प्लाज़्मा में वायरस की उपस्थिति के कोई प्रमाण न थे। आज यह बच्चा तीन साल का है और वायरस से मुक्त है।

सवाल यह है कि क्या इस कहानी को दोहराया जा सकता है। क्या वही उपचार क्रम अन्य बच्चों को भी वायरस मुक्त कर सकेगा? इसी सवाल का जवाब पाने के लिए यूएस के राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान ने एक अध्ययन की योजना बनाई है। यह अध्ययन एक साथ 11 देशों के कई अस्पतालों में किया जाएगा।

अध्ययन में ऐसे बच्चों को शामिल किया जाएगा जिनके वायरस के साथ पैदा होने की संभावना है। फिर उन्हें 48 घंटों के अंदर उपरोक्त दवा सम्मिश्रण देना शुरू कर दिया जाएगा। जब किसी बच्चे के शरीर में वायरस की उपस्थिति शून्य हो जाएगी, तब उपचार बंद कर दिया जाएगा। इसके बाद भी उसके खून की नियमित जांच की जाती रहेगी और यदि वायरस फिर से प्रकट होता है, तो उपचार शुरू कर दिया जाएगा। इस परियोजना के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान ने 52 लाख डॉलर मंजूर किए हैं। इसका नेतृत्व नॉर्थवेस्टर्न विश्वविद्यालय के शिशु रोग विशेषज्ञ एलेन गोल्ड चेडविक करेंगे।

अभी तक यह पता नहीं है कि पिछले वर्ष जिस बच्चे के शरीर से एड्स वायरस का सफाया हुआ था उसका राज़ क्या है। आम तौर पर एड्स वायरस रोधी दवाइयां वायरस को दबा देती हैं मगर उनका पूरी तरह सफाया नहीं कर पातीं। कारण यह है कि वायरस हमारे प्रतिरक्षा तंत्र की ही एक कोशिका (CD4+ T कोशिका) में छिपकर बैठा होता है और मौका मिलते ही फिर से हमला कर देता है। एक तरह से यह हमारे शरीर के अंदर ही वायरस भंडार बन जाता है। हो सकता है कि नवजात शिशु जब पैदा होते हैं तो उनके शरीर में वायरस तो होता है मगर वायरस भंडार नहीं बना होता है। लिहाज़ा दवाइयां बाहर घूमते वायरसों को नष्ट कर दें तो सारे वायरस हमेशा के लिए समाप्त हो जाएंगे। राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान का यह अध्ययन इस मायने में महत्वपूर्ण है कि लाखों बच्चों को बचाने की तरकीब मिलेगी और हम वायरस भंडार बनने की क्रियाविधि को समझ पाएंगे। *(स्रोत फीचर्स)*